SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-4, June- 2024
www.shikshasamvad.com

दूरदर्शन कार्यक्रमों से उत्पन्न समस्याएं एवं हिन्दी भाषा

महिमा
शोधार्थिनी
ग्लोकल विश्वविद्याल,
सहारनपुर (उ0प्र0)

डॉ0 नवनिता भाटिया
शोध पर्यवेक्षिका
ग्लोकल विश्वविद्याल,
सहारनपुर (उ0प्र0)

सारांश

यह नौकरी और व्यवसाय के बारे में भी महत्वाकाक्षायें बढ़ाने वाला साबित हुआ है। किशोरों का ज्ञान आमतौर पर ऐसी नौकरियों और धन्धों के बारे में बढ़ा है, जिन्हें सफेदपोश समझा जाता है। एक्टिंग, माडलिंग, जासूसी, और पत्रकारिता का ग्लैमर उन पर छाया रहता है। आजकल टी0वी0 पर ऐसे कई कार्यक्रम हैं, जो किशोर व किशोरियों को प्रतिभा दिखाने का मौका प्रदान करते हैं। ऐसा ही एक कार्यक्रम ''इंडियन आइडल'' है, जो किशोरों के बीच लोकप्रिय है। समाज में सबसे ज्यादा जो अच्छी बात है दूरदर्शन के बारे में, वो है कि वो देश की एकता को बढ़ा सकता है। दूसरी जातियों की कला के बारे में, परम्परा के बारे में, संस्कृति के बारे में जानकारी दे सकता है, जिससे कि जो सबसे जरूरी हमारे लिए है कि हम सब चाहें कितने विभिन्न प्रकार के धर्म हो भाषाएं हों, नियम और रस्म हों, लेकिन सब भारत के नागरिक हैं। तो भारत की एकता और अखंडता को मजबूत करने में दूरदर्शन बहुत उपयोगी हो सकता है।

मुख्य शब्द– *दूरदर्शन, कार्यक्रम, अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रमों, सशक्त।*

प्रस्तावना :

वर्तमान समय वृद्धि और बदलाव का समय है। आज जब विश्व के हर क्षेत्र में बदलाव तथा वृद्धि हो रही है, तो संचार माध्यमों में नई तकनीकों का विकास हो रहा है, जिसमें नई सम्भावनाओं का जन्म हो रहा है। ये सम्भावनायें शिक्षा के क्षेत्र में भी नई क्रान्ति लाई हैं।[1] संचार माध्यमों में दूरदर्शन एक सशक्त माध्यम है, जो कि जनता को शिक्षा एवं मनोरंजन के साथ–साथ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रमों से भी जोड़ता है। दूरदर्शन सेवा का उद्घाटन करते हुए भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था कि– 'Television would go a long way in broadcasting the popular out look and bringing people in line with scientific thinking'[2]

टी0वी0 एक चीज है, जो बराबरी ला सकती है। समाज में सबसे ज्यादा जो अच्छी बात है दूरदर्शन के बारे में, वो है कि वो देश की एकता को बढ़ा सकता है। दूसरी जातियों की कला के बारे में, परम्परा के बारे में, संस्कृति के बारे में जानकारी दे सकता है, जिससे कि जो सबसे जरूरी हमारे लिए है कि हम सब चाहें कितने विभिन्न प्रकार के धर्म हो भाषाएं हों, नियम और रस्म हों, लेकिन सब भारत के नागरिक हैं। तो भारत की एकता और अखंडता को मजबूत करने में दूरदर्शन बहुत उपयोगी हो सकता है और मेरी आशा है कि इसी दृष्टिकोण से हम इसे देखेंगे और जो लोग देहात के या दूसरे हैं, उनमें भी यही देशप्रेम और देश पर गौरव की भावना पैदा होगी, तो जितने लोग आज इस कार्यक्रम को देख रहे हैं और आगे देखेंगे।[3]

दूरदर्शन की उपयोगिता प्रायः सार्वभौमिक है। मानव जीवन और समाज के विविध पक्ष उसके द्वारा विविध प्रकार से लाभान्वित होते हैं। शिक्षा, विज्ञान, इतिहास, संस्कृति, नृत्य, कला, संगीत, क्रीड़ा, मनोरंजन, उद्योग धन्धे, समाज आदि विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित जानकारी प्रसारित करके समाज को लाभान्वित किया जाता है। अनेक दृश्यों, घटनाओं, स्थानों आदि को बहुत से लोग जीवन में कभी देखने की आशा ही नहीं कर सकते हैं, परन्तु दूरदर्शन पर उन्हें घर बैठे देख लेते हैं और उनके बारे में महत्वपूर्ण जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं।[4]

दूरदर्शन के माध्यम से हम विश्व की वैज्ञानिक प्रगति, तकनीकी उन्नति, सामाजिक बदलाव, बदलते सांस्कृतिक परिवेश और युद्ध व शान्ति में शाश्वत प्रश्नों से जुड़ते हैं तथा उसमें भागीदारी करते हैं। राजस्थान का संगीत और नृत्य परिवेश में ड्राइंग रूम में फ्रेंच नागरिकों का मनोरंजन करता है, तो बाल मजदूरों की समस्याएं और संघर्षपूर्ण जीवन से वह द्रवित भी हो उठता है।[5] इसके माध्यम से व्यक्ति देश की किसी भी घटना के बारे में जानकारी अपनी आंखों से देख सकते हैं। संचार के इस साधन द्वारा विभिन्न बीमारियों और चीजों के बारे में विवरण उनके सम्मुख सही तरीकों से रखा जाता है तो उनके पूर्वाग्रह दूर हो जाते है।[6]

टेलीविजन न केवल विचारों के प्रसार का माध्यम है, वरन वह वैचारिक दासता को थोपने का भी साधन हो सकता है। आज सांस्कृतिक आक्रमण की आम चर्चा है लेकिन हम चाहें तो इसी माध्यम को हमारे सांस्कृतिक प्रचार–प्रसार का साधन बनाया जा सकता है।[7]

प्रमुख अध्ययन–

वैज्ञानिकों के अनुसार लंबे समय तक शारीरिक निष्क्रियता से सूजन और चयापचय संबंधी समस्याओं का खतरा बढ़ जाता है। लम्बे समय तक निष्क्रिय बैठे रहने से प्राणाधार माने जाने वाले एंजाइम लिपोप्रोटीन और लिपासे की 90 प्रतिशत तक की कमी हो सकती है, जो हृदय रोग को नियन्त्रित करने का काम करते हैं।[8]

टी0वी0 चैनल्स द्वारा टी0आर0पी0 बढ़ाने के लिए चैनलों पर मनोरंजन के नाम पर अश्लीलता परोसी जा रही है। आज के बच्चे धारावाहिकों के साथ–साथ कार्टून कैरेक्टरों से भी प्रभावित हैं। बैन टेन, सुपरमैन, पोकोमान, स्पाईडरमैन, एक्समैन और सुपरमैन आदि हिंसक चरित्रों से बच्चों की आदतें प्रभावित होती हैं, ऐसे बच्चे अपने दादा–दादी और माता–पिता पर मुक्के जड़ने से भी बाज नहीं आते।[9] शोद्यार्थियों ने पाया कि तम्बाकू उत्पाद के विज्ञापन आंखों के सामने होने से इसके इस्तेमाल की सम्भावना में बढ़ोतरी हुई।[10]

दैनिक जागरण 2010 में प्रकाशित लेख ''इंटेलिजेंट बना रहा है इडियट बॉक्स'' से ज्ञात होता है कि यदि सही तरीके से टी0वी0 का इस्तेमाल किया जाये, तो यह ''इडियट बॉक्स'' बच्चों को इंटेलिजेंट बना सकता है, कारण है टी0वी0 पर आने वाले शिक्षा से संबंधित विभिन्न कार्यक्रम टी0वी0 के डिजीटल अवतार के जरिए घर बैठे रोचक क्विज, इंग्लिश स्पीकिंग, मैथ्स और साइंस सीख रहे हैं। 'डिजीटल' टी0वी0 क्लास 1 से 5 तक के स्टूडेंटस के लिए सी0बी0एस0ई0 पाठ्यक्रम पर आधारित गणित और विज्ञान के मॉडयूल्स के कार्यक्रम चला रहा है। साथ ही यह अपने टॉपर चैनल पर क्लॉस 9 से 12 तक के छात्रों को गणित और विज्ञान के प्रोग्राम सबस्क्रिप्शन पर दे रहा है।[11]

भास्कर राव (2009) ने विभिन्न अध्ययनों की ओर संकेत किया और बताया कि भारत में विभिन्न शोधकार्यों में हुए अध्ययनों के अनुसार तीव्रता से टेलीविजन देखने के कई प्रकार के नकारात्मक प्रभाव बच्चों पर देखने को मिले हैं। टेलीविजन देखने का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव यह है कि बालकों में आक्रामकता में वृद्धि तथा विचलित व्यवहारों के नमूने भारत में भी बार–बार देखने को मिले हैं। इसी उद्देश्य से यू0एस0ए0 में विभिन्न शोधकार्य हुए तथा बहुत से यूरोपियन देशों ने इसका सहयोग किया।[12]

येल यूनिवर्सिटी के डॉ0 कैरी ग्रास के एक अन्य अध्ययन के अनुसार ज्यादा टी0वी0 देखने से बच्चों के व्यवहार व सोच में जबरदस्त बदलाव आ रहा है और वे समय से पहले वयस्क हो रहे हैं।[13] कुछ शिक्षकों के अनुसार पुराने खेलकूद का स्थान वीडियो गेम ने ले लिया है। कई प्रकार के हिंसात्मक वीडियो गेम से भी बच्चों की मनोवृत्ति बदलती जा रही है।[14]

उद्देश्य–

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उददेश्य रहे हैं।

1. किशोर–किशोरियों द्वारा देखे जाने वाले चैनल का अध्ययन करना।
2. टी0वी0 चैनलों पर प्रसारित कार्यक्रमों में उनके द्वारा सबसे अधिक देखे जाने वाले कार्यक्रमों का पता लगाना।
3. टी0वी0 कार्यक्रमों से किशोर–किशोरियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र–

प्रस्तुत शोध हेतु शोधकार्य पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जनपद बिजनौर के मुख्यालय बिजनौर नगर में सम्पन्न किया गया है।

अध्ययन प्ररचना–

प्रस्तुत शोध अन्वेशणात्मक व वर्णनात्मक संरचना पर आधारित है।

निदर्शन–

हिन्दी भाषा में अनुसंधान विषय पर लिखी पुस्तकों में प्रतिदर्शन ॑;उचसपदहद्ध शब्द के लिए प्रतिदर्शन के अलावा न्यादर्श, प्रतिचयन तथा निदर्शन शब्दों का भी स्वतन्त्रतापूर्वक व व्यापक प्रयोग देखने को मिलता है। वास्तव में प्रतिदर्शन, न्यादर्श तथा निदर्शन एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।[15]

दैव निदर्शन चुनने की प्रविधियाँ–

दैव निदर्शन के अनुसार निदर्शन निकालने की अनेक प्रविधियां हैं, जिनमें से कुछ अधिक प्रचलन में हैं, जैसे–लाटरी विधि, कार्ड विधि, टिपेट विधि, ग्रिड विधि, नियमित अंकन प्रणाली, एक अनियमित अंकन प्रणाली आदि।[16]

आँकड़ों का संकलन–

प्रस्तुत शोध में तथ्यों के संकलन हेतु प्राथमिक स्रोतों में मुख्य रूप से प्रश्नावली प्रविधि का प्रयोग किया गया है, परन्तु ऐसे छात्र व छात्रायें, जिन्होंने प्रश्नावली को ठीक प्रकार से नहीं भरा, उनकी साक्षात्कार के माध्यम से सूचनाएं पूर्ण की गयी।

उपलब्धियाँ–

प्रस्तुत अध्ययन की निम्न उपलब्धियाँ रही हैं– टेलीविजन बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण माध्यम है, आम आदमी तक पहुँचने का। टेलीविजन से लोगों ने बहुत कुछ सीखा भी है, लेकिन उस पर आज जो चैनल्स काम कर रहे हैं, वे काफी आपत्तिजनक हैं। कुछ चैनल लोगों को काफी पसन्द हैं, लेकिन उसका जो पैटर्न है वह 'बोल्ड एण्ड ब्यूटीफुल' की नकल लगता है, जिसका असर हमारे समाज पर बहुत गलत पड़ रहा है, सन्तुलन लगभग खत्म ही हो रहा है, उसका बहुत बड़ा असर नई पीढ़ी पर पड़ रहा है। एक छह–सात साल की लड़की, जिसकी सोच और हरकतें चौदह–पन्द्रह साल की लड़की के समान लगें, तो समझ लीजिए कि संतुलन खत्म ही हो रहा है। प्रस्तुत लेख में किशोरावस्था में टी0वी0 कार्यक्रमों द्वारा उत्पन्न समस्याओं के सन्दर्भ में विभिन्न पक्षों का विवरण किया गया है, जो अग्रलिखित है–

व्यैक्तिक समस्यायें–

किशोरावस्था में टी0वी0 कार्यक्रमों के प्रभाव से विभिन्न वैयक्तिक समस्यायें उत्पन्न होती हैं। ये समस्यायें किशोरों के व्यक्तित्व से सम्बन्धित होती हैं। **पामर** ने अपनी पुस्तक **"किड्स आर ग्रोइंग ओल्ड यंगर"** में बच्चों में अपनी उम्र की अपेक्षा कहीं अधिक बड़ा और समझदार दिखाने की प्रवृत्ति की दिशा में मार्केटिंग स्ट्रेटजी को दर्शाया है। उनके अनुसार किशोरों की अपेक्षाओं में वृद्धि हुई है। आज उन्हें टी–शर्ट और जूतों से लेकर सेलफोन तक सारा साजो–सामान ब्रांडेड होना जरूरी है। एसेसरीज के बिना आज गुड़िया अधूरी है।[17]

किशोरियों द्वारा टी0वी0 अभिनेत्रियों का अनुकरण–

टी0वी0 पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की अभिनेत्रियों से प्रभावित होकर किशोरियाँ उनका अनुकरण करने लगती हैं। अध्ययन में चयनित 140 किशोरियों की अनुकरण सम्बन्धी स्थिति तालिका–1 के अनुसार पायी गयी है।

तालिका संख्या 1 से ज्ञात होता है कि 110 (78.60 प्रतिशत) किशोरियाँ टी0वी0 पर दिखाई जाने वाली अभिनेत्रियों का अनुकरण करती हैं व 30 (21.40 प्रतिशत) किशोरियाँ अनुकरण नहीं करती हैं।

किशोरियों द्वारा अभिनेत्रियों की तरह शारीरिक सौन्दर्य पाने की इच्छा :

अध्ययन हेतु चयनित किशोरियों में अभिनेत्रियों जैसा शारीरिक सौन्दर्य पाने की इच्छा तालिका–2 के अनुसार पायी गयी–

तालिका संख्या 2 दर्शाती है कि 77 (55.00 प्रतिशत) किशोरियाँ अपनी पसंदीदा अभिनेत्रियों की तरह ही शारीरिक डील–डौल व रंग–रूप पाना चाहती हैं। 63 (45.00 प्रतिशत) किशोरियाँ अपनी पंसदीदा नायिकाओं की तरह शारीरिक डील–डौल व रंग–रूप नहीं पाना चाहती हैं। इस सम्बन्ध में किशोरियों द्वारा साक्षात्कार के दौरान यह तथ्य भी प्रकाश में आया कि उपर्युक्त 77 में से 39 (50.00 प्रतिशत) किशोरियों में करीना जैसी जीरो फीगर पाने की तीव्र इच्छा थी। उनमें से 20 प्रतिशत ऐसी फीगर पाने के लिये योगा व डायटिंग भी कर रही थीं।

किशोरों में पसंदीदा अभिनेताओं का अनुकरण :

केवल किशोरियाँ ही नहीं, किशोर भी अभिनेताओं का अनुकरण करने में पीछे नहीं हैं। वे भी विभिन्न रूपों में इनका अनुकरण करते हैं। आजकल किशोर भी अपने शारीरिक सौन्दर्य, डील–डौल, वेशभूषा को लेकर काफी सतर्क हैं। उनके द्वारा अनुकरण की स्थिति को तालिका–3 संख्या में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 3 से ज्ञात होता है कि 115 (82.10 प्रतिशत) किशोर अपने पसंदीदा टी0वी0 या फिल्म कलाकारों का अनुकरण करते हैं, जबकि 25 (17.90 प्रतिशत) किशोर अनुकरण नहीं करते हैं।

महत्वाकांक्षाओं में वृद्धि–

वर्तमान में टी0वी0 के प्रभाव से किशोरों के महत्वाकांक्षाओं के स्तर में वृद्धि हो रही है। यह नौकरी और व्यवसाय के बारे में भी महत्वाकाक्षायें बढ़ाने वाला साबित हुआ है। किशोरों का ज्ञान आमतौर पर ऐसी नौकरियों और धन्धों के बारे में बढ़ा है, जिन्हें सफेदपोश समझा जाता है। एक्टिंग, माडलिंग, जासूसी, और पत्रकारिता का ग्लैमर उन पर छाया रहता है। आजकल टी0वी0 पर ऐसे कई कार्यक्रम हैं, जो किशोर व किशोरियों को प्रतिभा दिखाने का मौका प्रदान करते हैं। ऐसा ही एक कार्यक्रम ''इंडियन आइडल'' है, जो किशोरों के बीच लोकप्रिय है। पर यह भी सत्य है कि हर कोई इंडियन आइडल नहीं बन सकता और अनेक युवा इस हताशा की दशा में आत्मघाती कदम भी उठा लेते हैं।[18]

पूर्व प्रौढ़ता–

बदलते हुए सामाजिक परिवेश में इसकी भूमिका पर टिप्पणी करते हुए **बी0एस0 गुप्त** कहते हैं कि आज सबसे बड़ा खतरा 'पूर्व प्रौढ़ता और सतही प्रौढ़ता' का विकास है। टेलीविजन के माध्यम से अपनी प्रौढ़ विश्व की सतही पहचान को बच्चा दुनिया की वास्तविक समझ मान बैठता है। मनोवैज्ञानिकों की नजर में दूसरा खतरा प्रौढ़ों के सामाजिक और व्यक्तिगत अन्तर्द्वन्द्वों के निरन्तर चित्रण से है। इससे बच्चा प्रौढ़ता के बारे में भ्रामक धारणा बना लेता है। कुछ विशेषज्ञ मानते हैं कि भले ही वह इस प्रकृति की मूल प्रेरणा न हो, लेकिन वह बच्चों की पूर्व धारणाओं को मजबूत बनाता है।

पूर्व प्रौढ़ता की स्थिति–किशोर–किशोरियों में पूर्व प्रौढ़ता की स्थिति का पता लगाने के लिए उनसे वयस्क विज्ञापनों सैक्स, गर्भनिरोधक साधन, परिवार नियोजन, गर्भाधान, प्रसव, यौन सम्बन्धों के विषय में पूछा गया, जिस पर उन्होंने प्रतिक्रियायें व्यक्त कीं, जो तालिका 4 में दर्शायी गयी हैं–

तालिका संख्या 4 से ज्ञात होता है कि 207 (73.90 प्रतिशत) किशोर–किशोरियों को वयस्क विज्ञापनों के विषय में जानकारी है, व 73 (26.10 प्रतिशत) को जानकारी नहीं हैं। 212 (75.70 प्रतिशत) किशोर–किशोरियाँ सैक्स सम्बन्धों के विषय में जानते हैं व 68 (24.30 प्रतिशत) नहीं जानते हैं। 198 (70.70 प्रतिशत) किशोर–किशोरियाँ गर्भनिरोधक साधनों के विषय में जानकारी रखते हैं व 82 (29.30 प्रतिशत) नहीं रखते हैं, 202 (72.10 प्रतिशत) किशोर–किशोरियाँ परिवार नियोजन के विषय जानते हैं व 78 (27.90 प्रतिशत) नहीं जानते हैं। 199 (71.10 प्रतिशत) किशोर–किशोरियाँ गर्भाधान के विषय में ज्ञान रखते हैं व 81 (28.90 प्रतिशत) ज्ञान नहीं रखते हैं। इसके अतिरिक्त प्रसव के विषय में भी 205 (73.20 प्रतिशत) किशोर–किशोरियाँ ज्ञान रखते हैं व 75 (26.80 प्रतिशत) किशोर– किशोरियाँ ज्ञान नहीं रखते हैं। यौन–सम्बन्धों के विषय में भी 223 (79.60 प्रतिशत) किशोर–किशोरियाँ ज्ञान रखते हैं व 57 (20.40 प्रतिशत) ज्ञान नहीं रखते हैं।

सामाजिक समस्यायें :

वास्तव में टेलीविजन एक ऐसी संचार व्यवस्था है, जिसका पर्दा छोटा होने पर भी भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्रभावशाली होगा और आने वाले वर्षों में इनमें अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तनों की संभावना है। इसका दर्शक केवल एक निष्क्रिय सहभागी नहीं है, बल्कि टी0वी0 और उसके बीच अन्तःक्रिया होती है। यह अन्तःक्रिया का प्रभाव उनके व्यवहार और आचरण पर पड़ता है। वैयक्तिक स्तर से प्रारम्भ होता हुआ इसका प्रभाव सामाजिक रूप ले लेता है।[19] टी0वी0 ने हमारे सामाजिक जीवन को बहुत अधिक प्रभावित किया है। टी0वी0 का प्रभाव साधारणतः त्रिदिशात्मक ''थ्री डायमेन्शनल'' है। व्यक्ति, संस्कृति और समाज तीनों को यह प्रभावित करता है। किशोरों के व्यक्तित्वों, संस्कृतियों व सामाजिक परिवेश पर इस संचार माध्यम का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है।[20] इस बदलते हुए परिवेश और बदलती हुई जीवन मूल्य प्रक्रिया ने आदमी के अन्दर **अलगाववादी प्रवृत्तियों में वृद्धि** की है। आदमी इतना अकेला और निरीह हो गया है कि अपने समाज और भीतर से कटता जा रहा है, उदास होता जा रहा है। दूसरे शब्दों में कहें तो आदमी मर रहा है।[21] **सामाजिक रिश्तों** को टी0वी0 माध्यम किस तरह से कमजोर करता है, इसके बारे में अमेरिकी विशेषज्ञ **मैरी विन** ने अपने शोध में बताया है कि हमारे सामाजिक मूल्यों को ध्वंस करने में टेलीविजन ने विशेष रूप से अपना रोल अदा किया है। यह बात और भी चौकाने वाली है कि आज यह सब कुछ सबके सामने हो रहा है तथा इस परिप्रेक्ष्य में **सामाजिक कुरीतियों** को जिस तरह उभारा जा रहा है, वह समाज के पूरे तंत्र के लिए खतरनाक सीमा तक पार हो गया है।[22]

टी0वी0 द्वारा **सामाजिक सम्बन्धों** में **घनिष्ठता का अभाव** दिखाई पड़ रहा है। सामाजिक सम्बन्ध अब मात्र औपचारिकता बन कर रह गये हैं। पारिवारिक सदस्यों के बीच अन्तःक्रिया लगभग खत्म सी हो गई है। टी0वी0 देखते समय परिवार के सदस्य साथ तो होते हैं, परन्तु उनमें अन्तःक्रिया नाममात्र की होती है।

सामुदायिक भावना का ह्रास :

सामुदायिक भावना हमारी संस्कृति की बुनियाद रही है। एक–दूसरे के दुःख–सुख में भागीदार होना और मिलजुल कर रहना ही तो हमारा जीवन–मूल्य रहा है। टी0वी0 ने सबसे पहले इस पर प्रहार किया, विचारों पर हमला किया तथा फिर सोचने की शक्ति कुंद कर दी। टी0वी0 तथा फिल्मों ने किशोरों का सामाजिक दायरा तोड़ कर रख दिया है। आज वह बन्द कमरे में अकेला बैठकर घण्टों तक टी0वी0 के पर्दे के साथ बातें करता

है। दूसरे शब्दों में कहें तो वह उसके सम्मोहन में बंधा हुआ है। बंद कमरे के छोटे पर्दे के सम्मोहन में बंधकर अपने सामाजिक परिवेश से कट गया है, जिसकी वजह से ही उसकी दुनिया कमरे तक सिमट कर रह गयी है।[23]

सामूहिक कार्यक्रमों में जाने की स्थिति–

किशोर–किशोरियों में सामूहिक कार्यक्रमों में सम्मिलित होने की स्थिति तालिका–5 के अनुसार है।

तालिका संख्या 5 से स्पष्ट होता है कि 84 (30.0 प्रतिषत) किषोर–किशोरियाँ विवाह उत्सवों में जाना पसन्द करते हैं। 165 (58.90 प्रतिषत) पसन्द नहीं करते हैं। 31 (11.10 प्रतिष्त) कभी–कभी जाना पसन्द करते हैं। 92 (32.90 प्रतिषत) किषोर–किशोरियाँ मुंडन, जन्मदिन आदि में जाना पसन्द करते हैं, 151 (53.90 प्रतिषत) जाना पसन्द नहीं करते है, 37 (13.20 प्रतिषत) कभी–कभी जाना पसन्द करते हैं। 74 (26.40 प्रतिषत) किषोर–किषोरियाँ त्यौहार व उत्सवों आदि पर जाना पसन्द करते हैं, 153 (54.60 प्रतिषत) जाना पसन्द नहीं करते हैं, 53 (18.90 प्रतिषत) कभी–कभी जाना पसन्द करते है। 86 (30.70 प्रतिषत) किशोर–किषोरियाँ पास–पड़ौस आदि की दावत में जाना पसन्द करते हैं, 154 (55.00 प्रतिषत) जाना पसन्द नहीं करते हैं तथा 40 (14.30 प्रतिषत) कभी–कभी जाना पसन्द करते हैं।

ष्शोध के दौरान किये गये साक्षात्कार के समय यह तथ्य उजागर हुआ कि किषोर–किशोरियों का सामूहिक उत्सव में कभी–कभी जाने का अर्थ है कि उनके निकट सम्बन्धियों (पिता व माता के सगे बहन भाई) के यहां होने वाले उत्सवों में जाना।

सांस्कृतिक समस्या :

विदेशी मीडिया के प्रदर्शन ने भारतीय जनमानस को आक्रांत कर दिया है। पश्चिमी जीवन मूल्य की चकाचौंध ने उन्हें अभिभूत कर डाला है।[24] मीडिया पश्चिम की उपलब्धि का एकतरफा बखान करता है, और उसके नकारात्मक पहलू को भुला देता है।[25] लगभग हर धारावाहिक में अरबपति व खरबपति लोगों की आरामदायक जीवनशैली, परस्त्री सम्बन्धों की बहुलता, गैर कानूनी धन्धों में लिप्तता एवं पश्चिमी भौतिकवादी मूल्यों का अंधाधुंध अनुकरण अधिक दिखाया जा रहा है। परिणामस्वरूप किशोर–किशोरियों में इनके अनुकरण की होड़ लगी हुई दिखाई देती है।

अक्रामकता व अपराधों में वृद्धि :

बच्चे, विशेषकर किशोरों में ही निष्कलुश हृदय, जिज्ञासु प्रवृत्ति और चंचल मनोवृत्ति का समावेश होता है। मनुष्य की सबसे महत्वपूर्ण अवस्था किशोरावस्था होती है, क्योंकि इसी अवस्था में भावी जीवन की नींव रखी जाती है। लेकिन बदलते भौतिक उन्मादी परिवेश से बच्चों का भोलापन अब हिंसक रूप में बदलता जा रहा है। विगत कुछ दिनों पूर्व गुरुग्राम में आंठवीं कक्षा के छात्र ने अपने सहपाठी की हत्या कर दी। दूसरी घटना डब्ल्यू0डब्ल्यू0एफ0 की कुश्ती से प्रभावित होकर एक छात्र ने अपने ही मित्र की गर्दन नाटकीय अंदाज में तोड़कर हत्या कर दी। इन दिनों ये किशोर हिंसात्मक रूख कब अपना लें, कोई नहीं जानता। किशोरों में बढ़ रही हिंसा के पीछे टी0वी0 पर प्रसारित होने वाले हिंसात्मक कार्यक्रम इसका मुख्य कारण हैं।[26]

बागपत में नवीं कक्षा के छात्र द्वारा चार साल की बच्ची से रेप या फिर सात साल के सोनू द्वारा पड़ोसी को चाकू मार देना। ऐसा कुछ होते ही हम सब अपनी सुविधा के मुताबिक कोसना शुरू कर देते हैं। टी0वी0, फिल्में, इंटरनेट, समाज, स्कूल, वेस्टर्न कल्चर जैसी चीजें इसके लिए आसान टारगेट होती हैं। इन सबको बच्चों को बिगाड़ने वाली संस्था के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया जाता है। इन दिनों हर कोई परेशान है। टी0वी0 से लेकर अखबार और नेट तक बच्चे बेकाबू हुए जा रहे हैं, किसी की सुनते ही नहीं। कब क्या कर बैठे, कोई भरोसा नहीं।[27]

हिंसात्मक व्यवहार में वृद्धि :

अन्तर्राष्ट्रीय मेडिकल पत्रिका 'द लांसेट' में छोटे पर्दे पर हिंसा के दृश्य और किशोरों में बढ़ती आक्रामकता में संबंध पर जोर दिया गया। 1950 के दशक में जब टी0वी0 अपनी शैशवावस्था में था, तभी यह आशंका जताई गई थी कि टी0वी0 में प्रदर्शित हिंसा, दर्शकों को भी आक्रामक व्यवहार की प्रेरणा दे सकती है। अमेरिकी मानसिक स्वास्थ्य के सरकारी संस्थान ने भी 1988 में दी गई अपनी रिपोर्ट में इस बात की पुष्टि की थी। वर्तमान मेडिकल राय भी यही कहती है कि पर्दे की हिंसा व अश्लीलता दर्शकों के केन्द्रीय स्नायुतंत्र को उत्तेजित कर उसे अशान्त कर देती है। रक्तचाप, हृदय की धड़कन की गति, शरीर का तापमान भी बढ़ जाता है। इसके बावजूद टी0वी0 पर हिंसा और अश्लीलता वाले बाज आने को तैयार नहीं है। सारे विश्व की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में टी0वी0 पर परोसी जाने वाली सामग्री से हिंसात्मक व्यवहार को जोड़कर तीन हजार से अधिक रिपोर्ट प्रकाशित हो चुकी हैं, फिर भी इस प्रवृत्ति पर रोक नहीं लग पा रही है।[28]

तालिका संख्या 6 दर्शाती है कि 68 (48.60 प्रतिशत) किशोरों को टी0वी0 चैनलों व फिल्मों में दिखाई जाने वाली हिंसा बहुत पसन्द है, 48 (34.30 प्रतिशत) किशारों को यह बिल्कुल पसन्द नहीं है। जबकि 24 (17. 10 प्रतिशत) किशारों को कभी–कभी टी0वी0 चैनलों व फिल्मों में दिखाई जाने वाली हिंसा ठीक लगती है।

तालिका संख्या 7 में दर्शाये गये वे 92 किशोर, जिन्हें हिंसा बहुत पसन्द है तथा जिन्हें कभी–कभी ये ठीक लगती है, उनमें से 80 (87.00 प्रतिशत) किशोर अपने पसंदीदा अभिनेता द्वारा दिखाई गई हिंसा का अनुकरण करते हैं। जबकि 12 (13.00 प्रतिशत) किशोर अपने पसंदीदा अभिनेता द्वारा दिखाई गई हिंसा का अनुकरण नहीं करते हैं।

तालिका संख्या 8 से यह निष्कर्षित होता है कि 93 (66.40 प्रतिशत) किशोरों ने कभी न कभी हिंसा या मारपीट का प्रदर्शन अवश्य किया है व करते हैं, जबकि 47 (33.60 प्रतिशत) किशोरों ने हिंसा या मारपीट का प्रदर्शन कभी नहीं किया है। प्रस्तुत शोध में हमारी यह उपकल्पना कि किशोर टी0वी0 कार्यक्रमों से आक्रामक व हिंसात्मक व्यवहार सीखते हैं व इसका प्रदर्शन करते हैं (66.40 प्रतिशत) सत्य पाई गई है।

मादक द्रव्य व्यसन में वृद्धि :

टी0वी0 पर प्रसारित कार्यक्रमों, फिल्मों और विज्ञापनों का एक और नकारात्मक प्रभाव यह है कि इन पर विभिन्न कलाकारों द्वारा मादक पदार्थों के सेवन करते हुए दिखाया जाता है, जिससे किशोर बहुत जल्दी प्रभावित होते हैं, तथा स्वयं भी उसका सेवन करने के लिए प्रेरित होते हैं। इसके कई उदाहरण हमें आये दिन देखने को

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

मिलते हैं। जैसे अपने पसंदीदा अभिनेता–अभिनेत्री को शराब, सिगरेट यहां तक कि ड्रग्स आदि लेते देखकर उनका अनुकरण करना शुरू कर देते हैं, जिसे ये अपना स्टेटस सिम्बल मानते हैं।

किशोरों में मादक द्रव्यों के व्यसन की जो स्थिति शोध के दौरान प्रकाश में आयी, वह तालिका सं0 9 में दर्शायी गई है।

तालिका संख्या 9 से निष्कर्षित होता है कि 13 (9.28 प्रतिशत) किशोर सिगरेट, शराब, गुटका आदि के विज्ञापन को पसन्द करते हैं। 69 (49.28 प्रतिशत) इन विज्ञापनों को पसन्द नहीं करते हैं तथा 58 (41.42 प्रतिशत) किशोरों की इन विज्ञापनों के प्रति कोई प्रतिक्रिया नहीं हैं।

तालिका संख्या 11 यह दर्शाती है कि 87 (62.10 प्रतिशत) किशोर महिला कलाकारों के प्रति ज्यादा आकर्षित होते हैं तथा 53 (37.90 प्रतिशत) पुरूष कलाकारों के प्रति आकर्षित होते हैं। इसी प्रकार 61 (43.60 प्रतिषत) किशोरियाँ महिला कलाकारों के प्रति आकर्षित होती हैं तथा 79 (56.40 प्रतिशत) पुरूष कलाकारों के प्रति आकर्षित होती हैं।

पारिवारिक समस्या :

आजकल दूरदर्शन (टी0वी0) तेजी से प्रत्येक परिवार के जीवन का एक अनिवार्य अंग बनता जा रहा है। परिणामस्वरूप पारिवारिक जीवन पर इसके महत्वपूर्ण प्रभाव दिखायी पड़ रहे हैं। ये प्रभाव सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रकार के हैं। सकारात्मक प्रभावों में जहां यह प्रत्येक परिवार के मनोरंजन का आवश्यक साधन है, इसके माध्यम से विभिन्न ज्ञानवर्धक कार्यक्रम, देश–विदेश की खबरें, बाजार सम्बन्धी जानकारी, व्यावसायिक सूचनायें, खेलकूद, व्यापार एवं वाणिज्य सम्बन्धी नवीनतम जानकारियाँ हासिल करते हैं, वहीं टी0वी0 का नकारात्मक प्रभाव परिवार में कई समस्याओं को लेकर आया है।

स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या :

दूरदर्शन (टी0वी0) चैनलों से उत्पन्न किशोरावस्था की एक और समस्या यह है कि अधिक मात्रा में टेलीविजन देखने से किशोरों में विभिन्न स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं।

प्रस्तुत शोध हेतु 280 किषोर व किषोरियों से नेत्र–ज्योति से सम्बन्धित जो जानकारी प्राप्त हुई, वह तालिका 12 में दर्षायी गई है।

तालिका संख्या 12 से ज्ञात होता है कि 124 (44.30 प्रतिशत) किशोर–किशोरियों में दृष्टिदोष है तथा 156 (55.70 प्रतिशत) किशोर–किशोरियों को दृष्टिदोष नहीं है।

खान–पान की आदतों पर प्रभाव :

तालिका संख्या 13 से ज्ञात होता है कि चयनित 280 किषोर–किषोरियों में से 170 (60.70 प्रतिषत) टी0वी0 देखते समय कुछ न कुछ खाते, रहते हैं, 42 (15.00 प्रतिषत) किषोर–किषोरियाँ टी0वी0 देखते समय कुछ नहीं खाते जबकि 68 (24.30 प्रतिषत) किषोर–किषोरियाँ कभी–कभी ही ऐसा करते हैं।

साक्षात्कार के दौरान यह भी परिणाम सामने आया कि जो 170 (60.70 प्रतिषत) किषोर–किषोरियाँ टी0वी0 देखते समय कुछ न कुछ (पैप्सी, अंकल चिप्स, नमकीन, कुरकुरे, पॉप कॉर्न, चॉकलेट, च्युइंगम आदि) खाते रहते हैं, उनका वजन सामान्य से अधिक पाया गया।

: संदर्भ सूची :

1 अतर सिंह (1995), ''इम्पैक्ट ऑफ टेलीविजन प्रोग्राम ऑन द सोषियोलॉजी बिहेवियर ऑफ अरबन प्राइमरी स्कूल चिल्ड्रन ऐज परसीव्ड बाई देयर पेरेन्ट्स,पंजाब यूनिवर्सिटी, पटियाला।

2 कु0 कौठिया नम्रता, पूर्वोक्त, पृष्ठ सं0 (1)

3 18 सितम्बर 1984 को दिल्ली दूरदर्षन के द्वितीय चैनल के उद्घाटन अवसर पर प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी का भाषण, विज्ञापन और दृश्य, प्रचार निदेषालय सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आकल्पित एवं प्रकाषित। गोवर्धन कपूर एण्ड एन, नई दिल्ली।

4 उद्योग व्यापार पत्रिका (इलैक्ट्रोनिक्स इण्डिया), अगस्त 1990

5 डॉ0 कृष्ण कुमार रत्तू (1992), संचार क्रांति और बदलता सामाजिक सौंदर्यबोध, जयपुर (राज0) पृष्ठ सं0 16

6 कु0 नम्रता कोठिया, वृहत्तर ग्वालियर के निवासियों के सामाजिक जीवन पर दूरदर्षन का प्रभाव, अनपब्लिष्ड थीसेस, जीजाजी विष्वविद्यालय, पृ0 सं0 1–2

7 डॉ0 कृष्ण कुमार रत्तू, पूर्वोक्त।

8 पंजाब केसरी, ''आपके दिल का दुष्मन है कम्प्यूटर और टी0वी0'' 12 जनवरी 2011, पृष्ठ संख्या–12

9 दैनिक जागरण, ''बेलौस बचपन निगल रहा टी0वी0'' रविवार 14 फरवरी 2010, वर्ष 26, अंक 294, पृष्ठ–08

10 अमर उजाला, ''विज्ञापन लगाता है तम्बाकू की लत'', बुधवार, 1 दिसम्बर, 2010, पृष्ठ–116

11 दैनिक जागरण, 'झंकार' ''इंटेलिजेंट बना रहा है इडियट बॉक्स'' 5 दिसम्बर 2010, पृष्ठ–2

12 भास्कर राव एन0 (2009)

ॣण्बवदेपदकपंण्वतहण

13 दैनिक जागरण, ''ज्यादा टी0वी0 देखना बच्चों के स्वास्थ्य के लिए घातक'', वाषिंगटन रायटर : 22 दिसम्बर, 2008, वर्ष 25, अंक 246, पृष्ठ संख्या–18

14 अमर उजाला, ''टी0वी0 ने बनाया बच्चों को हिंसक'' 25 अगस्त 2008, वर्ष–21, पृष्ठ 6

15 रामपाल सिंह, ओ0पी0 शर्मा, शैक्षिक अनुसन्धान, अग्रवाल पब्लिकेषन, आगरा–7, पृ0 128

16 विरेन्द्र प्रकाष शर्मा, ''रिसर्च मैथडोलोजी'', पंचषील प्रकाषन, जयपुर, पृ0 227

17 हंसराज, सुमन, 'स्टिंग ऑपरेषन', श्री नटराज प्रकाषन, दिल्ली, पृष्ठ–204–205

18 बुलबुल गार्गी, ''दूरदर्षन का युवाओं पर प्रभाव'', शोध मन्थन, मार्च 2011, पृष्ठ–6

19 गार्गी बुलबुल, ''दूरदर्शन का युवाओं पर प्रभाव'', शोध मंथन, वॉल–2, नं. 1, मार्च–2011, पृष्ठ सं0–3

20 एन0 हरिकाग, ''टेलीविजन इन एवरी डे लाइफ'', जापानी समाचार रिव्यू, वॉल–10, पृष्ठ– 186–190

21 कृष्ण कुमार रत्तू ''संचार क्रांति और बदलता सामाजिक सौंदर्यबोध'', पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर, (राज0), पृष्ठ सं0 139

22 पूर्वोक्त : पृष्ठ सं0–85

23 पूर्वोक्त, पृष्ठ सं0 141

24 पूर्वोक्त, पृष्ठ सं0–141

25 रूपचन्द गौतम, ''मीडिया और संस्कृति'', पृष्ठ सं0–32–35

26 अनन्त मित्तल : पूर्वोक्त, पृष्ठ सं0–12

27 पाटिल विमला, पूर्वोक्त।

28 सरयु प्रसाद चौबे, ''किशोर मनोविज्ञान के मूल तत्व'' कॉन्सैप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, पृष्ठ सं0–146

29 राममोहन पाठक, ''इलैक्ट्रोनिक माध्यम रेडियो और दूरदर्शन'' यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं0–79

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-04, June- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-June-2024/37

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

महिमा और डॉ0 नवनिता भाटिया

For publication of research paper title

"दूरदर्शन कार्यक्रमों से उत्पन्न समस्याएं एवं हिन्दी भाषा"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-04, Month June, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com